॥ श्री ॥

परीक्षामुखवृत्ति

PARIKSHAAMUKHAVRITTI

अनन्तवीर्य · ११वीं शती · अभिलेख ६२/९०

अनन्तवीर्य → श्री बालचन्द्राचार्य

संक्षिप्त परिचय

आचार्य अनन्तवीर्य कृत — माणिक्यनन्दि के परीक्षामुख सूत्रों की सुगम वृत्ति; प्रमेयरत्नमाला नाम से न्याय-अध्ययन की प्रवेशिका रूप में प्रसिद्ध।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

परीक्षामुखवृत्ति — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ६२ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता अनन्तवीर्य; रचना-काल ११वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २०७) के अनुसार इनका समय ९७५–१०२५ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "द्रविड संघी सिद्धि विनिश्चयवृत्ति" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में धर्मपरीक्षा, श्रावकाचार, सुभाषितरत्नसंदोह, वर्धमानचरित, पार्श्वनाथचरित, न्यायकुमुदचन्द्र परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

धर्मपरीक्षा · श्रावकाचार · सुभाषितरत्नसंदोह · वर्धमानचरित · पार्श्वनाथचरित · न्यायकुमुदचन्द्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ६२ — मूल छायाचित्र